अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

सिक्का मुद्रा' पर धार्मिक प्रतीकवाद का अध्ययन

संतोष कुमार मिश्रा[1], डॉ. मुकेश कुमार[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़
[2]सहायक प्रोफेसर, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़

सारांश

प्राचीन भारत में भी, वस्तु विनिमय प्रणाली तेजी से फैलती अर्थव्यवस्था और वाणिज्य के लिए पर्याप्त या कारगर नहीं थी। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रमुख नदी-तटवर्ती सभ्यताओं में वस्तु व्यापार से हटकर विनिमय के माध्यम के रूप में धातु की ओर रुख किया गया। धातु के लगातार परीक्षण और वजन के माध्यम से लेन-देन की लागत को कम करने के लिए धातु का प्रमाणीकरण आवश्यक है। परिणामस्वरूप, धातु की शुद्धता और वजन सुनिश्चित करने के लिए धार्मिक प्रतीकों और पैटर्न का उपयोग धातु की वस्तु पर प्रमाणीकरण चिह्न के रूप में किया जा सकता है।

अगर कहानी में कोई वैधता होती, तो हम लोगों और स्थानों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले प्राचीन प्रतीकों में कुछ वैदिक प्रभाव देख सकते थे। इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि हिंदू धर्म और वैदिक धर्म पूरी तरह से अलग हैं। हाल ही में संस्कृत भाषा का उदय हुआ है। हालाँकि, शिक्षाविद इन स्पष्ट तथ्यों की अनदेखी करते हुए भारतीय इतिहास के विकृत संस्करण पर निरर्थक विवादों में उलझे हुए हैं। यह हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों के इतिहास के लिए बहुत हानिकारक है। भारतीय मन पर कभी भी कमजोर वैदिक संस्कृति का प्रभुत्व नहीं रहा। भौतिक साक्ष्य उनके दावे का समर्थन नहीं करते। खुले दिमाग से पीछे देखना ज़रूरी है।

***मुख्य शब्द:** नदी-तटवर्ती, धार्मिक, वस्तु व्यापार, शुद्धता, संस्कृत भाषा*

परिचय

तांबे और चांदी से बने सिक्के प्राचीन भारत की प्राथमिक मुद्रा थे, जो पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व और छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच कहीं उभरे थे। करशापान और पण उस समय के सिक्के थे। पश्चिम एशिया में प्रचलित सिक्कों के विपरीत, भारत के कई शुरुआती सिक्के वास्तव में धातु की मुहर लगी हुई छड़ें थीं। इससे संकेत मिलता है कि प्रारंभिक ऐतिहासिक भारत के जनपदों और महाजनपद राज्यों के पास मुद्रा मुद्रा के आविष्कार से पहले एक तरह की टोकन मुद्रा थी। कई मध्ययुगीन देशों ने अपनी मुद्राएँ बनाईं, जैसे गांधार, कुंतला, कुरु, मगध, पंचाल, शाक्य, सुरसेन, सुराष्ट्र, विदर्भ और कई अन्य।

दूसरी सहस्राब्दी के दौरान, जब भारत इंडो-इस्लामिक नियंत्रण में था, सिक्के ढालने की प्रथा बदल गई। जबकि 1800 के दशक में ब्रिटिश राज सत्ता में था।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

भारतीय उपमहाद्वीप में मुद्रा की उत्पत्ति

प्रागैतिहासिक और कांस्य युग की उत्पत्ति

भारत पहला देश था जिसने विनिमय के माध्यम के रूप में कौड़ी के गोले का इस्तेमाल किया। हड़प्पा युग के अंत (लगभग 1900-1800 ईसा पूर्व या 1750 ईसा पूर्व) के दौरान, मोहनजो दारो के डीके क्षेत्र ने खुलासा किया कि सिंधु घाटी सभ्यता ने चांदी जैसी निश्चित वजन वाली धातुओं के साथ व्यापार किया होगा। डीडी कोसंबी ने डी-श्रेणी के बाटों के बीच हड़ताली पहचान और समानता के आधार पर अनुमान लगाया कि मोहनजोदड़ो से प्राप्त डी और चतुर्थ श्रेणी के चांदी के टुकड़े पंच मुद्रांकित सिक्कों से जुड़े हो सकते हैं।[8] पंच-चिह्नित सिक्कों और सिंधु मुहरों पर पाए जाने वाले प्रतीकों के बीच हड़ताली समानता को भी प्रकाश में लाया गया है। सजावटी उद्देश्य की कमी के कारण, एरण में पाए गए ताम्रपाषाण काल के अचिह्नित सोने के डिस्क को मुद्रा की वस्तुओं के रूप में काम में लेने का दावा किया गया है। इसका वजन 14 ग्राम है, लेकिन चूंकि इसका एक चौथाई हिस्सा गायब है, इसलिए इसका वजन वास्तव में 21 ग्राम होगा, जो प्राचीन भारतीय सिक्का वजन मानकों के अनुरूप होगा और उस समय सोने के टोकन के प्रचलन के बारे में वैदिक साहित्य में दिए गए संदर्भों का समर्थन करता है। गुंगेरिया के खजाने में पाए गए गोलाकार चांदी के कलाकृतियों के कार्य के बारे में कई लोग इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुंचे हैं।

वजन मानक

सिंधु घाटी सभ्यता में, द्रव्यमान को रत्ती के रूप में मापा जाता रहा है, जो कांस्य युग से 0.11 या 0.12 ग्राम या गुंजा के बीज के वजन के बराबर होता है। दर्ज किया गया सबसे छोटा वजन 8 रत्ती या 0.856 ग्राम था, और वजन के गुणकों के लिए बाइनरी प्रणाली का इस्तेमाल किया गया था, जैसे 1:2:4:8:16:32, जिसमें 16वां अनुपात अन्य बातों के अलावा मानक नियमित वजन (16 × सबसे छोटा वजन) का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा लगता है कि सबसे पुराने भारतीय सिक्कों में भी वजन की इसी प्रणाली का इस्तेमाल किया गया है। एक माशा सिक्के का वजन 32 रत्ती था, जो सिंधु घाटी सभ्यता के मानक वजन के बराबर है, या एक चौथाई कर्षापना, जो 13.7 ग्राम (128 रत्ती) के बराबर है। सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद, कौटिल्य ने 32 रत्तियों के इस सेट को पुराण या धारणा के रूप में नामित किया है उदाहरण के लिए, जबकि कौटिल्य के समय में 8 रत्ती माशा मानक थे, अर्थशास्त्र में निर्दिष्ट किया गया है कि एक माशा 5 रत्ती के बराबर है। तांबे के पंच मार्क वाले सिक्कों (80 रत्ती, 146 ग्रेन, 9.46 ग्राम) के अलावा, गांधार क्वार्टर स्वर्ण सिक्के भी एक अलग 5 रत्ती माशा प्रणाली का पालन करते हैं, जिसका उल्लेख अर्थशास्त्र में किया गया है। शतपथ ब्राह्मण में सबसे पहले एक वजन प्रणाली का वर्णन किया गया है जिसे शतमान कहा जाता है, जिसका अर्थ है एक सौ कृष्णल। एक कृष्णल एक रत्ती के बराबर होता है। यह प्राचीन भारतीय चांदी के करशापना और शतमान सिक्के का वजन है।

1 सतनाम = 100 रत्ती / 11 ग्राम शुद्ध चांदी
1 कार्षापण = 32 रत्ती/3.3 ग्राम शुद्ध चांदी
½ कार्षापण = 16 रत्ती
¼ कार्षापण (माशा) = 8 रत्ती
1/8 कार्षापण = 4 रत्ती

पश्चिम एशियाई प्रभावों का सिद्धांत

जब भारतीय पंच-मार्क मुद्रा (पीएमसी) की बात आती है, तो विशेषज्ञ अभी भी इस बात पर सहमत नहीं हो सकते हैं कि यह कहां से आया है। फिर भी, चांदी के पैसे के सबसे पुराने ज्ञात उदाहरण उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

खोजे गए मुड़े हुए बार हैं; वे 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व से नुश-ए-जान के खजाने और 4वीं शताब्दी ईसा पूर्व से चमन हुज़ूरी (काबुल) के खजाने के लगभग उसी समय के हैं, जो दोनों ईरान में खोजे गए थे। मौर्य साम्राज्य (322-185 ईसा पूर्व) से पहले गढ़े गए, रेडियो कार्बन डेटिंग के साथ 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व से आगे की तारीखों का सुझाव देते हुए, भारत के दक्षिण और पूर्व में मौजूद पहला धातु का पैसा उत्तर पश्चिम की तुलना में बाद का है। यह उत्तरी ब्लैक पॉलिश्ड वेयर सभ्यता के साथ समकालीन है। कुछ शिक्षाविदों के अनुसार, सिक्कों की उत्पत्ति पश्चिम एशिया में हुई और इसने सिंधु-गंगा के मैदान में अपना रास्ता बनाया।

साहित्य की समीक्षा

श्रेया गौतम (2018)धातु (सोना, चांदी, तांबा, आदि) का एक निश्चित वजन और मूल्य होता है, जो अक्सर एक गोलाकार डिस्क के रूप में होता है, जिसे आधिकारिक तौर पर स्वीकृत तंत्र के माध्यम से मुद्रा में परिवर्तित किया जाता है; यह ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी की सिक्के की परिभाषा के अनुसार है। जब दुनिया भर में प्राचीन साम्राज्यों के इतिहास की बात आती है, तो सिक्का एक प्रमुख स्रोत है। भारत में, यह कुषाण और गुप्त राजवंशों के लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इसकी कल्पना का विश्लेषण करके, हम गुप्त शासकों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक इतिहास को एक साथ जोड़ सकते हैं, जो अब तक खोजे गए सिक्कों के सबसे बड़े संग्रह का धन्यवाद है। इसके अतिरिक्त, गुप्त सिक्के उस समय के शासकों के धार्मिक विचारों और गुप्त सभ्यता के अंदर हुए धार्मिक परिवर्तनों पर प्रकाश डालते हैं। यह लेख इनमें से चार सिक्कों पर एक नज़र डालता है और उनके शिलालेखों और प्रतिमा विज्ञान को समझने की कोशिश करता है ताकि पता लगाया जा सके कि वे क्या दर्शाते हैं और क्या उनका वाणिज्य के साधन और माप की इकाई के रूप में सेवा करने के अलावा कोई अन्य कार्य था।

विन्सेंट आर्थर स्मिथ (2011)1883 में, मैंने बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी के माध्यम से "उत्तरी भारत के शाही गुप्त राजवंश के स्वर्ण सिक्कों की एक वर्गीकृत और विस्तृत सूची, एक परिचयात्मक निबंध के साथ" शीर्षक से एक पेपर जारी किया। अध्ययन में उस समय गुप्त स्वर्ण मुद्रा के बारे में ज्ञात सभी जानकारी शामिल थी। चूँकि मैं उस समय तांबे और चांदी की मुद्रा पर गहन शोध करने में असमर्थ था, इसलिए मुझे इसके बजाय सोने के सिक्कों पर चर्चा करने के साथ ही संतोष करना पड़ा, जो आलोचना प्राप्त करने और आगे के शोध के बाद त्रुटिपूर्ण और गलत निकला। मैंने गुप्त सिक्कों की अपनी जांच पूरी कर ली है और उसे अद्यतन कर लिया है, और अब मैं आधिकारिक कर्तव्यों से छुट्टी लेने के कारण अपने मुद्राशास्त्रीय अध्ययन को फिर से शुरू करने में सक्षम हूँ।

जेम्स फर्ग्यूसन (2014)जेम्स फर्ग्यूसन का दोहरा करियर एक वास्तुशिल्प इतिहासकार के रूप में और भारत में नील की खेती करने वाले किसान के रूप में दस साल का कार्यकाल रहा। उनका जन्म स्कॉटलैंड में हुआ था। इस विषय में किसी भी तरह की आधिकारिक शिक्षा के बिना भी वे भारत में गुफा मंदिरों के विशेषज्ञ बन गए। 1876 में अपने पहले प्रकाशन के बाद, उनका भारतीय और पूर्वी वास्तुकला का इतिहास जल्दी ही एक क्लासिक का दर्जा प्राप्त कर लिया। प्रसिद्ध वास्तुकार और इतिहासकार रिचर्ड स्पियर्स (1838-1916) और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक जेम्स बर्गेस (1832-1916) ने इसे 1910 के संस्करण के लिए अद्यतन किया, जो दो खंडों में प्रकाशित हुआ। दूसरा खंड जावा, बर्मा, कंबोडिया और थाईलैंड सहित कई एशियाई देशों की स्थापत्य शैलियों के साथ-साथ भारत में इस्लामी वास्तुकला पर भी प्रकाश डालता है। जापान और चीन के मंदिर अंतिम अध्याय का विषय हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

विक्रमसिंघा, एचएमवाईपी (2023)श्रीलंका और भारत दोनों के पास पुराने सिक्के हैं जिन्हें पंच-मार्क सिक्के के रूप में जाना जाता है। सिक्के के आगे और पीछे आप कई तरह के चिह्न देख सकते हैं। छठी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी तक, ये सिक्के प्रचलन में रहे। क्योंकि इन सिक्कों पर 600 से अधिक अलग-अलग प्रतीक हैं, इसलिए विशेषज्ञ इस बात पर असहमत हैं कि उन्हें कैसे समझा जाए। इन प्रतीकों के कई पाठों की जाँच करना और बेहतर सुझाव देना इस अध्ययन का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक गहन साहित्य अध्ययन हमारी प्रक्रिया का मुख्य घटक था। पंच-मार्क सिक्कों पर देखे जा सकने वाले चिह्नों में राज्य, निर्माता का प्रतीक, परिवार का प्रतीक और प्राधिकरण का प्रतीक शामिल हैं जो सिक्के की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है।

अनुभवजन्य जांच की व्याख्या

'सिक्का मुद्रा' पर धार्मिक प्रतीकवाद का महत्व

सबसे पहले, मैं साउथ इंडियन न्यूमिज़मैटिक सोसाइटी के कार्यकारी बोर्ड के सभी सदस्यों को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे उनके उनतीसवें वार्षिक सम्मेलन का महासचिव चुना है, जो तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में आयोजित किया जा रहा है, और सोसाइटी की 375वीं वर्षगांठ मना रहा है। यह प्राचीन भारतीय मुद्रा के साथ-साथ भारत के पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में खोजे गए रोमन और उप-रोमन सिक्कों की ओर ध्यान आकर्षित करने में मेरी छोटी लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका के लिए आभार का एक छोटा सा प्रतीक है। पिछले सम्मेलनों की अध्यक्षता सर्वश्री केजी कृष्णन, पीवी परब्रह्म शास्त्री, आईके सरमा और डॉ. एवी नरसिंह मूर्ति, केवी रमन, अजय मित्र शास्त्री, डॉ. आर कृष्णमूर्ति और डॉ. डी राजा रेड्डी जैसे सम्मानित शिक्षाविदों ने की है, जो दोनों स्वतंत्र मुद्राशास्त्री शोधकर्ता हैं। मैं अपने दम पर इन मानकों पर खरा उतरने की आकांक्षा नहीं कर सकता, लेकिन आपके दयालु समर्थन के साथ, मैं महासचिव के रूप में अपने कर्तव्यों को पूरा करने की पूरी कोशिश करूँगा।

2011 में राजपलायम में मुझे पीएल गुप्ता रजत पुरस्कार प्रदान करने के लिए दक्षिण भारतीय मुद्राशास्त्र सोसायटी के अध्यक्ष और कार्यकारी समिति के प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता। गुप्ता भारतीय मुद्राशास्त्र के जनक थे। नासिक में मुद्राशास्त्र संस्थान में डॉ. गुप्ता के साथ जूनियर सहकर्मी के रूप में काम करने और उनसे प्राचीन भारतीय सिक्का और मुद्रा प्रणाली की मूल बातें सीखने का अवसर एक महान आशीर्वाद है, और मुझे इस प्रतिष्ठित सभा को इसके बारे में सूचित करते हुए खुशी हो रही है। इसके अतिरिक्त, मैं नासिक में मुद्राशास्त्र संस्थान में प्रोफेसर अजय मित्र शास्त्री, बीएन मुखर्जी, डॉ. केके माहेश्वरी, डॉ. डेविड डब्ल्यू. मैकडॉवल, प्रोफेसर पीटर बर्गौस और डॉ. माइकल मिचिनर जैसे प्रसिद्ध मुद्राशास्त्रियों के साथ काम करने में बिताए समय को याद करने के लिए बाध्य महसूस करता हूं। उनकी शिक्षाओं और प्रकाशनों ने मुझे बहुत प्रभावित किया, और अब मैं मुंबई में भारतीय रिजर्व बैंक के मौद्रिक संग्रहालय में भारतीय मुद्राशास्त्र का एक उत्साही शोधकर्ता हूं।

तमिलनाडु न्यूमिज़मैटिक सोसाइटी की स्थापना के अवसर पर, मुझे चेन्नई में इस प्रतिष्ठित श्रोतागण को संबोधित करते हुए बहुत खुशी हो रही है, यह वह शहर है जहाँ तीस साल पहले मुझे दक्षिण भारतीय मुद्राशास्त्रियों के बीच अग्रणी व्यक्ति और दक्षिण भारतीय मुद्राशास्त्रीय सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. आर. कृष्णमूर्ति ने पहली बार भारतीय मुद्राशास्त्र से परिचित कराया था। मद्रास विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास और पुरातत्व के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति प्रोफेसर केवी रमन ने मुझे नासिक के न्यूमिज़मैटिक इंस्टीट्यूट में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया था, जब मैं वहाँ एक छात्र था। इन दो विशेषज्ञों द्वारा भारतीय मुद्राशास्त्र के क्षेत्र से मेरे परिचय के परिणामस्वरूप, मैं बहुत कुछ सीखने, इस विषय पर विस्तार से लिखने और रोमन और भारतीय सिक्कों पर कई लेख और पुस्तकें

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

प्रकाशित करने में सक्षम हुआ। मैं उनका हमेशा आभारी रहूँगा। इस समय, मैं मद्रास विश्वविद्यालय में अपने प्रिय प्रोफेसर एस गुरुमूर्ति से भारतीय मुद्राशास्त्र में प्राप्त अमूल्य पाठों के बारे में सोचकर बहुत खुश हूँ। अंतिम टिप्पणी के रूप में, मैं तिरुपति स्थित श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर किरण के. चौधरी को धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने प्राचीन भारतीय सिक्कों पर धार्मिक प्रतीकवाद पर अपना शोध प्रबंध लिखने के मेरे निर्णय के पीछे प्रेरक शक्ति का कार्य किया।

मेरे दोस्तों, मेरी राय है कि राष्ट्रपति के संबोधन का उद्देश्य इस मुद्दे पर कुछ विचार प्रदान करना और दूसरों को इसके बारे में अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, मैंने सिक्कों पर धार्मिक प्रतीकवाद के बारे में लिखने का फैसला किया है और यह कैसे पैसे के मूल्य और शुद्धता के लिए प्रामाणिकता की मुहर के रूप में कार्य करता है। प्रतीक मुख्य रूप से प्रकृति से प्राप्त होते हैं और विभिन्न देवी-देवताओं को दर्शाते हैं। जैसा कि सर्वविदित है, व्यापार के माध्यम के रूप में कार्य करने के लिए सिक्कों का शुद्धता और वजन एक समान होना चाहिए।

पूरे इतिहास में, वस्तु विनिमय प्रणाली हमेशा प्राचीन काल की तेज़ी से फैलती अर्थव्यवस्थाओं और व्यापार नेटवर्क की माँगों को पूरा करने में विफल रही है। परिणामस्वरूप, वस्तु व्यापार में गिरावट आई और उनके किनारों पर विकसित होने वाली विशाल नदी सभ्यताओं ने अंततः विनिमय के साधन के रूप में धातु का उपयोग करना शुरू कर दिया। प्रत्येक लेन-देन के लिए धातु का प्रमाणीकरण आवश्यक है, जिसके लिए मात्राओं को तौलने और व्यक्तिगत आधार पर शुद्धता की पुष्टि करने से जुड़ी लागतें आती हैं। बदले में, इसने धार्मिक प्रतीकों और पैटर्न को धातु की वस्तु पर प्रामाणिकता का चिह्न प्राप्त करने की अनुमति दी, जिससे इसकी शुद्धता और वजन सुनिश्चित हुआ।

ऐसा माना जाता था कि धातु की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका उस पर सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त प्रतीकों को अंकित करना होगा। आम लोगों को प्रतीकों को उच्च सम्मान देना चाहिए, और सभी को उनसे परिचित होना चाहिए। इस विचार के आधार पर दुनिया के पहले सिक्कों में से अधिकांश में धार्मिक प्रतीकों को शामिल करना शुरू किया गया। आजकल, आप इन प्रतीकों को कला और वास्तुकला में देख सकते हैं जो प्रकृति से प्रेरित थे। यह प्राकृतिक तत्व थे - सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, वायु और जल - जिनका प्राचीन लोग सबसे अधिक सम्मान करते थे। प्राचीन भारतीय सिक्कों में बौद्ध और जैन विहारों और स्तूपों पर देखे जाने वाले पुष्प और जीव-जंतुओं के डिजाइनों को उनके प्राथमिक डिजाइन तत्वों के रूप में इस्तेमाल किया गया था। उनकी उत्पत्ति का प्रश्न और सिक्के पर प्रामाणिक चिह्न के रूप में उनके उपयोग के कारण इस संदर्भ में प्रासंगिक हो जाते हैं।

गुफावासी जिसने सबसे पहले पेंटिंग बनाना शुरू किया, उसने अपने दैनिक जीवन में देखे जाने वाले जानवरों और प्राकृतिक शक्तियों को चित्रित किया जो उसके हर कदम को निर्देशित करती थीं। भले ही वह सभी जानवरों को पालतू नहीं बना पाया, लेकिन उसने कुछ जानवरों को पवित्र बनाने में कामयाबी हासिल की। प्रकृति का प्रतिनिधित्व करने वाले कई प्रतीकों को भित्तिचित्रों में दर्शाया गया था, जिसमें किरणों वाला सूरज, खड़ी रेखाओं वाले झरने और क्षैतिज रेखाओं वाली नदियाँ शामिल हैं। एक नायक या देवता का जन्म उन लड़ाकों के समूह से हो सकता है जिन्होंने अपने साथी मनुष्यों को जंगली जानवरों जैसे खतरों से बचाया हो। अतीत में, कई संस्कृतियों ने इस उम्मीद में कई देवताओं की पूजा की है कि वे नुकसान से बचा सकते हैं। यह यूनानियों, रोमनों, फारसियों और भारतीयों के लिए सच था। कई विशेषताओं वाले लोगों को यूनानियों और रोमनों द्वारा मानव रूप में पूजा

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

जाता था। भारतीय पौराणिक कथाओं में देवताओं के पास अक्सर मानव चरित्र के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने के लिए कई सिर और हाथ होते हैं। मनुष्यों को सही दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए, इन देवताओं का निर्माण किया गया था।

मानवीय अनुभव का हर पहलू, चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक, एक पवित्र चीज़ बन गया है। पहाड़, नदियाँ, झरने, पेड़ और पौधों सहित कई तरह के प्राकृतिक चमत्कारों की पूजा की जाती थी। बलि के जानवरों और उन्हें मारने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले औजारों को अपने आप में भगवान के रूप में पूजा जाता था। डब्ल्यू. रिजवे (1892) के अनुसार, शेर और बैल के सामने के आधे हिस्से को दर्शाने वाले लिडियन सिक्के सूर्य और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करते थे, जबकि एगिनन डि-ड्रैचम में एक कछुआ है जो एफ्रोडाइट का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्रजनन देवी है जिसे रोमन वीनस के बराबर माना जाता था। इसी तरह, ग्रीक पौराणिक कथाओं में, ज़ीउस को वज्र या चील, पोसिडॉन को त्रिशूल, एथेना को उल्लू और अपोलो को त्रिशूल द्वारा दर्शाया गया था।

आम जनता के बीच उनकी शानदार प्रतिष्ठा के कारण हर कोई इन धार्मिक प्रतीकों से परिचित था। ऐसा करते समय, इन प्रतीकों ने लोगों में भय और भय दोनों को प्रेरित किया होगा। इसलिए उन्होंने इसे एक संकेत के रूप में देखा कि यह एक वैध प्रकार की मुद्रा थी और उन्होंने वादा किया कि वे जल्दी से जल्दी पैसा कमाने के लिए इसे सस्ती धातुओं से नहीं बनाएंगे।

उच्च पदस्थ शाही अधिकारियों की छवियाँ निम्नलिखित प्रतीक चिह्नों का समूह बनाती हैं। संप्रभुओं को देवता मानने और उनकी पूजा करने की आदत ने शासकों की तस्वीरों को शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया। सिक्कों पर अपनी छवि को अमर बनाने वाले पहले शासक यूनानी थे, जिनकी अपने राजाओं के प्रति भक्ति ने उन्हें दिव्य दर्जा दिलाया। आम लोग राजा की छवि को बहुत सम्मान देते थे, और यह अनैतिक व्यवहार के खिलाफ़ एक निवारक के रूप में कार्य करता था। ढलाई किए गए पैसे के अग्रभाग पर एक शाही चित्र या जारीकर्ता का नाम दर्शाया जाता है, जो राजनीतिक संप्रभुता का प्रतीक है, जबकि पीछे की ओर देवताओं और उनके गुणों को दर्शाया जाता है। 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में बनाए गए पहले सिक्कों से लेकर 20वीं शताब्दी ईस्वी तक, यह विचार प्रभावी रहा।

आप मध्य युग के सिक्कों के बारे में भी यही बात कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, कई मध्यकालीन सिक्कों पर पहले चार खलीफाओं के नाम और कुरान के अंश कलिमा अंकित हैं, जो धार्मिक पहचान के रूप में काम करते हैं। दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने पहला टोकन मनी जारी किया और भगवान के नाम पर, इसके चांदी के मूल्य के बदले में एक आधार धातु की गारंटी दी। फिर उन्होंने इसे स्वीकार करने का आदेश दिया। इस तांबे के सिक्के को इसके चांदी के मूल्य के लिए स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि इसमें सुल्तान का अनुसरण करने की प्रतिबद्धता है, जो बदले में भगवान और पैगंबर मुहम्मद बिन तगलक का पालन करता है। यह कुरान से भगवान और सम्राट के प्रति निष्ठा की भावना पैदा करने की अपील है। भगवान के नाम पर, वह नए सिक्के के इच्छित मूल्य के बारे में बिल्कुल स्पष्ट था और सुनिश्चित किया कि हर कोई इसे जानता हो।

यूनानियों और शकों के आगमन के बाद, भारतीय सिक्कों पर धार्मिक और राजनीतिक दोनों तरह के प्रतीक अंकित होने लगे, जैसे कि शासक राजा की प्रतिमा या जारी करने वाले प्राधिकारी का नाम, सिक्के के एक तरफ और धार्मिक आकृति, जिसे प्रमाणिकता के रूप में दर्शाया जाता था।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

एच. कृष्ण शास्त्री, बीसी भट्टाचार्य, जे. डबरुइल और एनके भट्टसाली उन कला और धार्मिक इतिहासकारों में से थे जिन्होंने क्रमशः 1914 और 1916 में हिंदू आइकनोग्राफी के तत्वों पर दो खंड तैयार किए। टीए गोपीनाथ राव भारतीय आइकनोग्राफी के क्षेत्र में अग्रणी थे। हिंदू देवताओं की आइकनोग्राफी इन शिक्षाविदों का एकमात्र फोकस था।

ब्राह्मण देवताओं और प्राचीन भारतीय सिक्कों और मुहरों पर उनके प्रतीकों का पहला व्यापक विवरण जेएन बनर्जी ने अपनी 1941 की कृति "हिंदू प्रतीक-विद्या का विकास" में दिया था। विशेष रूप से, उन्होंने देवताओं के चित्रण के लिए प्लास्टिक कला और धातु के सिक्कों को देखा। अयोध्या, मित्रा, इंडो-सिथियन और उज्जयिनी लोगों के सिक्कों में बुद्ध की आकृति शामिल है, जिसे बनर्जी ने सबसे पहले कनिष्क और गज-लक्ष्मी (चित्र 24-26) उपकरणों पर दिखाई देने के रूप में वर्णित किया है। उस समय उनके बारे में जानकारी की कमी के कारण, उनकी जांच में पाया गया कि गज-लक्ष्मी सातवाहन सिक्कों पर दिखाई देती थीं। उन्होंने आधुनिक सिक्कों और पत्थर की मूर्तियों के बीच समानताएं खींची हैं, जिसमें गुर्जर प्रतिहार शासक भोज प्रथम के सिक्कों पर वराह अवतार की छवि और बहुत कुछ शामिल है।

यह ध्यान देने योग्य है कि मुद्राशास्त्रियों ने प्राचीन भारतीय सिक्कों पर धार्मिक प्रतीकों के महत्व का अध्ययन ई. थॉमस (1886), ए. कनिंघम (1891), डीबी स्पूनर (एएसआर 1905-06), डीआर भंडारकर (बेसनगर में उत्खनन, एएसआईएआर, 1913-14 और 1914-15), ईएचई वाल्श (जेबीओआरएस, 1919), दुर्गा प्रसाद (जेएएसबी, न्यूमिस. सप्ल., 1934), जे. एलन (1936), पीएल गुप्ता (1963) और केके दासगुप्ता (आदिवासी सिक्के, 1974) जैसे कार्यों में किया है।

पंच मार्क वाले चांदी के सिक्के इन शोधकर्ताओं का प्राथमिक ध्यान केन्द्रित करने वाले सिक्के थे क्योंकि वे प्राचीन भारतीय मुद्रा का पहला रूप थे। उनका मानना है कि ये प्रतीक, जो पौधों और जानवरों के विषयों को दर्शाते हैं, प्रकृति में उत्पन्न हुए हैं। सिक्कों पर दिखाए गए धार्मिक रूपांकन भारतीय आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से की अप्रतिष्ठित विरासत को दर्शाते हैं। प्रतीकात्मक पूजा के आगमन ने प्रतीकात्मक पूजा की इस प्रथा को बाधित नहीं किया। यह संभव है कि सिक्कों पर देवी-देवताओं के वाहनों के दैवीय चित्रण इस विचार को व्यक्त करते हैं।

इन प्रतीकों के धार्मिक और आर्थिक महत्व को बी. चट्टोपाध्याय (1977), ओपी सिंह (1978) और सविता शर्मा (1990) ने समझाने का प्रयास किया है। चट्टोपाध्याय इस बात से सहमत हैं कि इन प्रतीकों को किसी खास धर्म से जोड़ना आसान नहीं है, चाहे वह ब्राह्मणवादी हो, बौद्ध हो, जैन हो या कोई और। अपनी पुस्तक अर्ली इंडियन सिंबल्स में, सविता शर्मा इस बात के प्रमाण देती हैं कि सिक्कों पर बने डिज़ाइन आधुनिक कला और वास्तुकला पर आधारित हैं। मुख्य प्रतीकों और देवताओं से उनके संबंधों पर उन्होंने शोध किया। इन प्रतीकों में सूर्य, चक्र, स्वस्तिक, श्रीवत्स, नंदीपद, त्रिरत्न, वृषभ, पर्वत, वृक्ष, छह भुजाएँ और उज्जयिनी शामिल थे।

निष्कर्ष

अब तक की चर्चा ने मथुरा के लगभग तीन शताब्दियों के मौद्रिक इतिहास को ट्रैक किया है और इस बात की जानकारी दी है कि कैसे सिक्कों ने इस क्षेत्र में सांस्कृतिक गतिविधियों और राजनीतिक संरचनाओं के बीच परस्पर क्रिया की हमारी समझ को आगे बढ़ाने में मदद की है। संक्षेप में संक्षेप में कहें तो, हम अभी भी यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि तथाकथित 'सूरसेन जनपद' सिक्के वास्तव में मथुरा के सिक्के थे। हालाँकि, यह

इस क्षेत्र में मुद्रीकरण की एक डिग्री को इंगित करता है जिसने कला के उत्कर्ष को बढ़ावा दिया हो सकता है। स्थानीय प्रकृति के मौर्योत्तर पंच-चिह्नित चांदी के सिक्कों पर प्रतीकों के माध्यम से, हम महसूस करते हैं कि बाद की शताब्दियों में मथुरा की कला में हम जो प्रतिष्ठित चित्रण देखते हैं, उन्हें दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में इन सिक्कों का उपयोग करने वाली आबादी के बीच समझा, सराहा और प्रचलन में रखा गया था। हमें यह भी समझने की आवश्यकता है कि विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में 'शैली' को प्राथमिकता देने के आधार पर दिए गए तर्कों पर नए साक्ष्य और व्याख्याओं के प्रकाश में फिर से विचार करने की आवश्यकता है। अंत में, नए मुद्राशास्त्रीय साक्ष्यों के माध्यम से हम बेहतर तरीके से जान सकते हैं कि राजनीतिक परिवर्तन कैसे हुए और कब राज्य का निर्माण हुआ। मथुरा अंततः कुषाणों के हाथों खो गया। जैसा कि ऊपर दिखाया गया है, मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य मथुरा की कला में सामान्य कालानुक्रमिक विकास की पुष्टि करने के लिए भी उपयोगी है और कुछ उदाहरणों में, वास्तव में टुकड़ों (जैसे कि एशमोलियन और अन्य संग्रहालय/निजी संग्रह में रेलिंग से कोपिंग स्टोन के टुकड़े) को उनके उचित कालानुक्रमिक स्थान पर पुनः स्थापित करने में मदद की है।

संदर्भ

[1]. सिंकर, दीपक और शर्मा, मंदाकिनी और दानी, राकेश। (2022)। शक्ति की अभिव्यक्ति: प्रतीकवाद; आध्यात्मिकता और अमूर्तता। 23. 152-160।
[2]. रोहित अशोक यादव "प्राचीन भारतीय और प्रारंभिक मध्यकालीन अभिलेखों का अध्ययन, विशेष रूप से पशु और पुरातत्व के संदर्भ में" खंड 9, अंक 7 जुलाई 2024 | आईएसएसएन: 2456-4184
[3]. ए., रेम्या. (2021). केरल में सिक्कों का इतिहास. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च. 9. 136-140. 10.21474/IJAR01/12815.
[4]. स्मिता एम. भाविकट्टी "भारतीय सिक्कों, मुद्रा और इसके विकास का इतिहास: एक अध्ययन" खंड 12, अंक सितंबर 2021
[5]. कुमारी, आकांशा और मावरी, एमएस। (2023)। बौद्ध छत्र पर उत्कीर्ण प्रतीक: मथुरा संग्रहालय का विशेष संदर्भ। शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स। 4. 10.29121/शोधकोश.v4.i2.2023.727.
[6]. मारबानियांग, डोमेनिक (2015). हिंदू धर्म का इतिहास: पूर्ववैदिक और वैदिक युग.
[7]. गौतम, श्रेया (2019). प्राचीन भारतीय सिक्कों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग।
[8]. पोंटिंग, मैथ्यू. (2012). सिक्के के निर्माण का सार: प्राचीन मुद्राशास्त्र में वैज्ञानिक विश्लेषण की भूमिका. ग्रीक और रोमन सिक्कों की ऑक्सफोर्ड हैंडबुक. 10.1093/oxfordhb/9780195305746.013.0002.
[9]. नोम्बुलेलो शांगे "शेम्बे धर्म का अफ्रीकी पारंपरिक धर्म और ईसाई धर्म का एकीकरण: एक समाजशास्त्रीय केस स्टडी" जुलाई 2013
[10]. वेबस्टर, ओएफएच (2019) पहचान, धर्म और साम्राज्य: रोमन फ़िनिशिया के नागरिक सिक्के।
[11]. डॉ. वानासर्न नूनसुक "ताम्ब्रालिंगा के हृदय स्थल की खोज में: केंद्रीय सिचोन जिले, नाखोन सी थम्मारत में पुरातात्विक स्थलों, राज्य गठन और सांस्कृतिक परिदृश्य का वितरण" 2016
[12]. जनसारी, सुषमा. (2018). सोफाइट्स सिक्के: पंजाब से बैक्ट्रिया तक और वापस. न्यूमिज़मैटिक क्रॉनिकल. 178.
[13]. वैन अल्फेन, पीटर. (2012). एथेंस के सिक्के, छठी से पहली शताब्दी ईसा पूर्व. ग्रीक और रोमन सिक्कों की ऑक्सफोर्ड हैंडबुक. 10.1093/oxfordhb/9780195305746.013.0006.
[14]. वज्राचार्य, गौतम. (2016). प्राचीन भारत और वैदिक अनुष्ठान में यूनिकॉर्न. 10.11588/ejvs.2010.2.322.

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्टूबर - दिसंबर 2024

[15]. होलकोम्ब, कोलिन. (2022). मनी, कॉइनेज एंड सोसाइटी वॉल्यूम वन: प्रारंभिक और मध्यकालीन समाज मनी, कॉइनेज एंड सोसाइटी वॉल्यूम I: प्रारंभिक और मध्यकालीन समाज.

[16]. वर्दन्यान, अराम. (2015). ईसाई-इस्लामी सहजीवन पैसे में उभरा: राजनीतिक और आर्थिक प्रचार के लिए एक उपकरण के रूप में सिक्के. शेडेट, पुरातत्व संकाय, फयूम विश्वविद्यालय द्वारा जारी वार्षिक सहकर्मी-समीक्षित पत्रिका. 2. 23-39. 10.36816/shedet.002.11.